बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन

मंजु लता शर्मा[*] एवं डा0 प्रदीप तिवारी[**]

[*]शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), आई.एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

[**]सहायक प्रोफेसर, आई.एफ.टी.एम., विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

सारांश

आज अध्यापक शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य नैतिक, चरित्रवान व्यक्ति का निर्माण करना है, तभी राष्ट्र संसाधन हो सकता है, अन्यथा देश के अमीर होने पर भी यहाँ लोग गरीब ही बने रहेंगे। शोधकर्त्री के अनुसार सभी शिक्षकों का कार्य समान होता है प्रत्येक शिक्षक वैसा ही कार्य करेगा जैसी उसकी विचारधारा होगी तथा जैसा उसको वेतन मिलेगा अथवा जैसी सेवा शर्तें होंगी। सामान्यतः निजी शिक्षण संस्थाओं में सेवारत अंशकालिक शिक्षक तभी अपने व्यवसाय को अच्छे ढंग से सम्पन्न कर सकेगा जब उसका शोषण तथा उत्पीड़न न किया जाये, उसमें मानसिक तनाव न हो और उसे अपने व्यवसाय के प्रति रूचि हो। विद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों की प्रभावशीलता पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, जीवन कौशल आदि के साथ–साथ प्रबन्धन का व्यवहार का भी प्रभाव पड़ता है। जब एक शिक्षक अपने कार्य से सन्तुष्ट होता है और वह वेतन आदि तत्वों से जब सन्तुष्ट होता है तो उसकी शिक्षण प्रभावशीलता भी धनात्मक स्थिति को प्राप्त करता है। एक प्रभावशीलता शिक्षक अपने शिक्षण से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करता है एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि को भी उच्च स्तर तक ले जाता आंकड़ों के विश्लेषण करने पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए – बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का लैगिंक आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया। बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया। बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।

संकेत शब्द :– *विद्यालय, शिक्षण प्रभावशीलता, शिक्षक ।*

प्रस्तावना :–

अध्यापक शिक्षा के विकास के परिप्रेक्ष्य में सूचना प्रौद्योगिकी के स्थान तथा महत्व को भी आज हम अस्वीकृत नहीं कर सकते है। यदि गुणवत्ता नियन्त्रण को महत्व नहीं दिया जाता है तो पारम्परिक प्रत्यक्ष माध्यम जो कि औपचारिक रूप से प्रचलित है, उत्तम स्तरीय अध्यापक प्रस्तुत करने में प्रायः असफल ही साबित होते है। आज अध्यापक शिक्षा का कार्य एकमात्र उद्देश्य नैतिक, चरित्रवान बालक का निर्माण करना है, तभी राष्ट्र संसाधन हो सकता है, अन्यथा देश के अमीर होने पर भी यहाँ लोग गरीब ही बने रहेंगे। शोधकर्त्री के अनुसार सभी शिक्षकों का कार्य समान होता है प्रत्येक शिक्षक वैसा ही कार्य करेगा जैसी उसकी विचारधारा होगी तथा जैसा उसको वेतन मिलेगा अथवा जैसी सेवा शर्तें होंगी। सामान्यतः संस्थाओं में सेवारत शिक्षक तभी अपने व्यवसाय को अच्छे ढंग से सम्पन्न कर सकेगा जब उसका शोषण तथा उत्पीड़न न किया जाये, उसमें मानसिक तनाव न हो और उसे अपने व्यवसाय के प्रति रूचि हो। पूर्व आनुभविक अध्ययनों से स्पष्ट है कि संस्थाओं के शिक्षक अपनी सेवाओं से कतई प्रसन्न एवं सन्तुष्ट नहीं है उनके मन में हमेशा यह भय बना रहता है कि कहीं कुछ ऐसा न हो जाये जिससे उसकी सेवायें खतरे में पड़ जायें या सेवा समाप्त हो जाये या कहीं विभाग (शासन) द्वारा ऐसा आदेश न आ जाये कि अंशकालिक के स्थान पर दूसरे पूर्णकालिक शिक्षकों की नियुक्ति कर ली गई है, अतः देश के विकास तथा विद्यार्थियों

के सर्वागीण विकास हेतु सस्था, शिक्षक और शिक्षा इन तीनों में भी शिक्षा का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को जानने का प्रयास किया जायेगा। इसको जानने हेतु शिक्षको का लैगिक आधार, क्षेत्रीय आधार एवं वर्ग में वर्गीकृत किया जायेगा। शोध से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों की प्रभावशीलता बढ़ाने में लाभदायक होगें।

आवश्यकता एवं महत्व :–

शिक्षा प्राप्ति के लिए गुरु का सदैव महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल में छात्र गुरु–गृहों में जाकर विधार्जन किया करते थे चाहे वैदिक काल हो, जैन धर्म, बौद्ध धर्म काल हो या फिर मुस्लिम काल। शिक्षक प्रत्येक काल में सम्मान जनक स्थान पर प्रतिष्ठित रहे है। समय चक्र की गति के साथ–साथ शिक्षा की सामाजिक मान्यताओं व अपेक्षाओं में व्यापक परिवर्तन हुयें हैं। किसी राष्ट्र की मानव शक्ति की गुणवत्ता शिक्षा के स्तर से प्रभावित होती है। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवयव है। समय के साथ–साथ पुरातन सामाजिक व जीवन मूल्य सम्प्रति अपनी प्रसांगिकता खो चुके है। शिक्षक ने अपना गौरवशाली व्यक्तित्व खो दिया है। वह भी आज मजदूर की भाँति अर्थोन्मुखी हो गया है। यदि सिक्के का दूसरा पहलू देखे तो हम पाते हैं कि औद्योगीकरण व वैश्वीकरण के रंग में रंगते जा रहे इस भौतिकवादी समाज में सम्मान जनक जीवन यापन हेतु शिक्षकों के दृष्टिकोण में बदलाव अप्रत्याशित नहीं है। इस स्थिति के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी स्वयं समाज ही है। समाज में भौतिकतावादी वृत्ति पनपते रहने का दुष्परिणाम यह है कि केवल धनोपार्जन को श्रेष्ठता मिल गयी है। अन्य विकासशील व विकसित देशों में शिक्षकों के वेतनमान व पदोन्नति के अवसर अन्य व्यवसायों की तुलना में बेहतर है। वहाँ शिक्षण को प्रतिष्ठा का व्यवसाय माना जाता है। समाज में शिक्षकों के प्रति आदर व सम्मान का वातावरण है, इसके विपरीत भारत में अध्यापकों के प्रति अनास्था, अनादर व अविश्वास की भावना बढ़ती जा रही है।'' असन्तुष्ट शिक्षक केवल अधकचरे ज्ञान से सरावोर विद्यार्थी ही उत्पन्न कर पायेगा जो राष्ट्र को पतन के गर्त में ले जायेंगे। असन्तुष्ट शिक्षकों से छात्रों में मूल्यों, रूचियों, अभिवृत्तियों, आदतों एवं वैयक्तिक सामंजस्यशीलता के सृजन एवं विकास की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन :–

निम्नलिखित विद्यार्थियों ने प्रस्तुत विषयों को शोध का विषय बनाया है जिसमें धूलिया, ऊषा (1989), दुबे, आर॰ एन॰ धर (1989), दुआ, पी॰ (1990), गांगुली मालविका (1989), नटराजन, आर॰ (1992), मिश्रा, गिरश्वर (1992) और कुलश्रेष्ठ, प्रदीप कुमार (1992) आदि प्रमुख है।

समस्या कथन :–

बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का का अध्ययन

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :–

विद्यालय :– विद्यालयों से आशय उन विद्यालयों से है जो उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त व संचालित होते है। इन विद्यालयों के शिक्षकों को वेतन आयोग द्वारा निर्धारित पूर्ण वेतन व भत्ते प्राप्त होते हैं।

शिक्षक :– शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का प्राचीन काल से वर्तमान समय तक महत्वपूर्ण अंग रहा है। बिना शिक्षक के कोई भी शिक्षण प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती है।

शिक्षण प्रभावशीलता :– प्रभावशीलता से आशय एक शिक्षक का शिक्षण में उचित प्रभाव, गुण आदि पैदा करने की क्षमता से है। एक प्रभावशाली शिक्षक अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। शिक्षण प्रभावशीलता का अभिप्रायः किसी अध्यापक की वह योग्यता है जिसके अन्तर्ग वह विद्यार्थियों में मौलिक कौशलों, समझ, तांछित आदतों, बांछित दृष्टिकोणों, मूलों को आंकने की योग्यता एवं समुचित व्यक्तित्व समायोजन के विकास में सहायकता करता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का लैगिंक आधार पर अध्ययन।
2. बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का क्षेत्रीय आधार पर अध्ययन।
3. बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का वर्ग के आधार पर अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :–

1. बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का लैगिंक आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।

आंकड़े संग्रहण के उपकरण :–

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श :–

वर्तमान शोधपत्र हेतु 100 शिक्षकों को शामिल किया जायेगा।

उपकरण :–

1. शिक्षण प्रभावशीलता – डॉ. शालु पुरी एवं प्रो. एस. सी. गोखर।

तालिका – 1

बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का लैगिंक आधार पर मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात
पुरूष शिक्षक	50	297.045	33.28	3.805
महिला शिक्षक	50	302.710	32.86	

तालिका संख्या 1 के द्वारा बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का लैगिंक आधार पर मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात को दशार्या गया है। जिसमें पुरूष शिक्षकों की प्रभावशीलता का मध्यमान एवं प्रमाप विचलन 297.045 (33.28) प्राप्त हुआ है जबकि महिला शिक्षकों की प्रभावशीलता का मध्यमान एवं मानक विचलन 302.710 (32.86) प्राप्त हुआ है। इन दोनों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 3.805 प्राप्त हुआ है प्राप्त क्रान्तिक मूल्य दोनो समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। जिससे सिद्ध होता है कि पुरूष शिक्षकों और महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना सं॰ 1 स्वीकृत हुई।

तालिका – 2

बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का क्षेत्रीय आधार पर मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात
ग्रामीण शिक्षक	45	298.01	50.14	6.209
शहरी शिक्षक	55	301.88	36.62	

तालिका संख्या 2 के द्वारा बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का क्षेत्रीय आधार पर मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात को दशार्या गया है। जिसमें ग्रामीण

शिक्षकों की प्रभावशीलता का मध्यमान एवं प्रमाप विचलन 298.01 (50.14) प्राप्त हुआ है जबकि शहरी शिक्षकों की प्रभावशीलता का मध्यमान एवं मानक विचलन 301.88 (36.62) प्राप्त हुआ है। इन दोनों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 6.209 प्राप्त हुआ है प्राप्त क्रान्तिक मूल्य दोनो समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। जिससे सिद्ध होता है कि ग्रामीण शिक्षकों और शहरी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना सं॰ 2 स्वीकृत हुई।

तालिका – 3

बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का वर्ग के आधार पर मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात
कला वर्ग के शिक्षक	55	295.48	31.28	2.065
विज्ञान वर्ग के शिक्षक	45	302.57	25.23	

तालिका संख्या 3 के द्वारा बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का वर्ग के आधार पर मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात को दशार्या गया है। जिसमें कला वर्ग के शिक्षकों की प्रभावशीलता का मध्यमान एवं प्रमाप विचलन 295.48 (31.28) प्राप्त हुआ है जबकि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की प्रभावशीलता का मध्यमान एवं मानक विचलन 302.57 (25.23) प्राप्त हुआ है। इन दोनों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 2.065 प्राप्त हुआ है प्राप्त क्रान्तिक मूल्य दोनो समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। जिससे सिद्ध होता है कि कला वर्ग के शिक्षकों और विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना सं॰ 3 स्वीकृत हुई।

निष्कर्ष :–

1. बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का लैगिंक आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।
2. बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।
3. बरेली जनपद के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

भटनागर, आर॰ पी॰ (1988). *शिक्षा अनुसंधान विधि एवं विश्लेषण'* मेरठ : लायक बुक डिपो,

अस्थाना, विपिन (1999–2000). *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन व मूल्यांकन,* आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर

गुप्ता, एस॰ पी॰ एवं गुप्ता अलका (1988). *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,* इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

वाजपेयी डी॰ के॰:(1979). *मॉडनाइजेशन एण्ड सोशल चेन्ज इन इण्डिया.* नई दिल्ली : रमेश जैन मनोहर पब्लिकेशन्स,एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰(2000).*फिफथ सर्वे ऑफ एजूकेशन रिसर्च. वाल्यूम–2.* नई दिल्ली, एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰, 2000।

साहू आर॰ (1969). *हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।'' एम॰ फिल॰ डिजर्टेशन,* हिमाचल विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश

****

मूल्य शिक्षा और विद्या से दूर होती हमारी शिक्षा

डॉ0 सीमा पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा संकाय श्रीमती द्रौपदी देवी त्रिपाठी पी0जी0, कॉलेज, खजनी गोरखपुर

सारांश

यकीनन सूचना एवं संचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई है। यही कारण है कि अब विश्व का विस्तार सिमट गया है। इसे यूं भी कह सकते है कि विश्व आपकी मुट्ठी में सिमट गया है। कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाइल आदि ने दूरियां यकीनन एकदम घटा दी है। नतीजतन बाजार तंत्र खूब परवान चढ़ा है। बाजारू मानसिकता बढ़ी है और उपभोक्ता संस्कृति में वृद्धि आश्चर्यजनक ढंग से हुई है। दूरियां मिटाने वाली सूचना और संचार की इस क्रांति ने कुछ ऐसी दूरिया बढ़ायी भी है, जो हमें भटकाव की तरफ ले जा रही है। हम, खासकर हमारा युवा वर्ग इस भटकाव का सबसे ज्यादा शिकार हुआ है। हमारा युवा वर्ग शिक्षा के उन मूल्यों से बहुत दूर चला गया है, जो हमारी धरोहर जैसे थे और जिन्हे हम मूल्य शिक्षा या नैतिक शिक्षा कहा करते थे। ये नैतिक मूल्य दम तोड़ चुके है। वर्जनाएं टूट चुकी हैं, फलतः अमर्यादित आचरण बढ़ा है।

संकेत शब्द :– *मूल्य शिक्षा, नैतिक शिक्षा, शिक्षा,।*

मूल्य शिक्षा :–

मूल्य एक सामान्य नामकरण चयन होने की गुणशीलता (Worthiness to be chosen) का है। जो चयन किया जा सकता है उचित (Right) तथा उत्तम (Good) के सन्दर्भ में है। शिक्षा का परम उद्देश्य चयन करने की प्रवृत्तियों को स्थापित करना है किन्तु चयन में विकल्प सन्निहित है और अनेकों विकल्पों में से निर्णय लेकर किसी एक विकल्प का चुनाव करना बहुत सरल नहीं होता। चुनाव का आधार ही मूल्य होता है। गीगर महोदय के अनुसार ''मूल्य मानव विकल्पों के परिणाम प्रतिद्वन्द्वी मानव रूचियों के बीच होते है''।

मूल्य की परिभाषाएँ : –

सी0वी0गुड : – ''मूल्य वह चारत्रिक विशेषता है, जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्यबोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। लगभग सभी विचार मूल्यों के अभीष्ट चरित्र को स्वीकार करते है''।

आलपोर्ट : – मूल्य एक मानव विश्वास है, जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है

मूल्यों के लक्षण /विशेषताए :–

मूल्य जीवन को संचालित एवं संचारित करते है। व्यक्ति को सुनियोजित जीवन व्यतीत करने तथा स्वयं के परिष्कार करने के लिए मूल्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। मूल्यों के द्वारा ही व्यक्ति के जीवन आदर्श (Life Philosophy) बनते है, जो उसे न्याय के मार्ग पर अग्रसर करते है। मूल्यों की कुछ विशिष्ट विशिष्टताएं होती है, जिनके आधार पर उन्हें पहचाना जा सकता है। ये विशिष्टताएं या लक्षण निम्नलिखित है :–

1. बस्तुओं की उपयोगिता

2. विभिन्न पहलुओं पर आधारित
3. वचनबद्धता
4. मानसिक प्रक्रिया
5. संवेगात्मकता
6. चिन्तन प्रक्रिया
7. जीवन शैली में सहायक
8. विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन
9. अनुभवात्मकता
10. मानदण्ड एवं आकलन
11. मानक एवं मूल्याकंन

उपरोक्त मूल्य की विशेषताए या लक्षण मूल्य सभी व्यक्तियों के लिए समान रूप से महत्वकारी हों। देश, काल, परिस्थिति और परिवेश के अनुसार मूल्यों की व्यक्ति संबंधी अलग–अलग प्राथमिकताएं होती है।

मूल्यों की प्रकृति :–

मनुष्य अपने विचारों से प्रेरित होकर मूल्य के सम्बन्ध में निर्णय लेता है, जिसे मूल्य का निर्णय कहा जाता है। मूल्य का संबंध मनुष्य और वस्तु के गुण दोनों से होता है। वस्तु की उपयोगिता के आधार पर ही मनुष्य मूल्य निर्णय लेता है। यह एक पुष्प है : यह कथन या विचार ऐसा है, जिनको इन्द्रियानुभव द्वारा देखकर प्रमाणित किया जा सकता है परन्तु यह पुष्प सुन्दर है : यह एक मूल्य निर्णय है। इस मूल्यनिर्णय का प्रमाणीकरण कैसे और किस आधार पर किया जाए यह मूल्य की प्रकृति द्वारा तय होता है। मूल्यो की प्रकृति इस प्रकार है :– (1) मूल्य परिभाषीकरण नहीं है, (2) मूल्य संवेगात्मक अभिव्यक्ति है, (3) मूल्य इच्छा की पूर्ति करते है, (4) मूल्य द्वारा वस्तु का गुण प्रकट होता है, (5) मूल्य तत्त्व है, मूल्य (6) सम्बन्ध प्रकट करता है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मूल्य का संबंध मनुष्य तथा वस्तु के गुण दोनों से है। मूल्य स्वतंत्र संबंध में है, और मूल्य निर्णय का आधार है। प्रत्येक मूल्य निर्णय में एक आर्दश का भाव विद्यमान है, जो कुछ वस्तु में है वह पूर्ण नहीं है आर्दश नहीं है वह कम है और उनका आर्दश एक ऐसा मापदण्ड बन जाता है, जिसके अनुसार मूल्य का निर्णय किया जाता है।

मूल्य निर्धारित शिक्षा :–

हमारे देश में मूल्य निर्धारित शिक्षा पर अब बल दिया जा रहा है। मूल्य शिक्षा या मूल्य निर्धारित शिक्षा में यही अन्तर लिया जा सकता कि मूल्य शिक्षा विद्यालयी शिक्षा तक सीमित रहती है जबकि मूल्य निर्धारित शिक्षा जीवनभर चलने वाली है। इस प्रकार की शिक्ष ामें सम्पूर्ण समय का योगदान होता है व्यवहारिक रूप में मूल्य शिक्षा और मूल्य निर्धारित शिक्षा में कोई विशेष विभेद नहीं किया जा सकता है।

विद्या

एषां न विद्या न तपो न दानम् ,
ज्ञानम् न शीतलम् न गुणो न धर्मः
ते मृत्यु लोके भुवि भार भूता ,
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति ।

उक्त श्लोक से ध्वनित होता है कि मनुष्य को मनुष्य बनाने वाले प्रमुख तत्वों में से विद्या प्रथम तत्व है। **'विद्या ददाति विनयं'** अर्थात विद्या ज्ञान की वह धारा है, जो व्यक्ति को विनयशील मनुष्य बनाती है। विद्या व्रत धारी ही सही अर्थों में स्नातक कहलाने योग्य होती है। वैदिक काल से जिस विद्या की गहरी जड़ो को हमारे मनस्वी, वेदांती, ऋषि–मुनिसींचते आये, आज विद्या की वह परंपरा विलुप्त हो रही है।सच तो यह है कि मैकाले द्वारा हमें सौंपी गयी शिक्षा व्यवस्था के प्रभाव में हम इस बुरी तरह से जकड़े हुए हैं कि विद्या और शिक्षा के बीच के फर्क को हम समझ ही नहीं पा रहे है। हम विद्या से दूर होते जा रहे है और उस शिक्षा के गुणगान में लगे हैं, जो सिर्फ किताबी कीड़ों की फौज तैयार कर रही है। यह देखकर लगता है कि कुटिल अंग्रेज मैकाले अपने मन्तव्य में कई गुना ज्यादा कामयाब हो चुका है। लार्ड मैकाले ने एक सोची–समझी साजिश के तहत एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का लबादा हमें उढ़ाया था, जो हमारी सनातन व्यवस्था का कफन तो साबित हुई ही, इसने नयी समस्याओं को भी जन्म दिया । लार्ड मैकाले ने कहा था, ''इस शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षित भारतीय जन रंग –रूप में तो भारतीय होगें, परन्तु मन –मस्तिष्क, चिन्तन और रहन –सहन के स्तर पर पूर्णतः आंग्ल संस्कृति के दास ही बने रहेगें।'' सचमुच, यही हुआ और मैकाले की शिक्षा पद्धति में रगी हमारी पीढ़ी आज तक अंग्रेजों के मानसिक दासत्व से उबर नहीं पायी।

यह खोखलापन हममें इसलिए आया, क्योकि हम अपने आधार, अपनी जड़ों व अपनी संस्कृति से दूर होते चले गये। अपनी प्राचीन व्यवस्थाओं को हमनें भुला दिया। शिक्षा के मायावयी आवरण में ढ़के हम विद्या और शास्त्रीय विधि –विधानों से इतना दूर होते गये कि 'विश्व गुरू' कहलाने वाला भारत भ्रष्टाचार में अग्रणी हो गया ।

हम विद्या के मूल तत्व से हटकर विसंगतियों को जन्म दे रहे है। विद्या हमें विनम्र, सहिष्णु, उदार और अच्छे आचरण की तरफ प्रेरित करती है, पर आज की शिक्षा में ये मुख्य तत्व दूर – दूर तक नहीं दिखते। कारण, हमारे परंपरागत विद्या के स्त्रोतों से यह शिक्षा नहीं उपजी है। हमारे पारंपरिक विद्या के स्त्रोत वेद –ग्रंथ थे। हमारे शास्त्रों में वह सब कुछ था, जो कि एक संतुलित समाज के निर्माण में सहायक होता है। भले ही समय –समय पर हुए विदेशी हमलों के कारण श्रेष्ठ शास्त्रों से युक्त हमारे पुस्तकालय नष्ट हो गये, पर ज्ञान नहीं नष्ट हुआ । दुखद यह रहा कि नयी व आधुनिक शिक्षा ने विद्या के प्राचीन स्त्रोतों व उस ज्ञान की अनदेखी की, जो हमारे मनस्वियों तपस्वी एवं वेदान्तियों ने विकसित किया था और जो हमारे गौरवशाली अतीत की पहचान थी। विद्या विलुप्त होती गयी और हम उस शिक्षा की तरफ भगते रहे, जो सिर्फ साक्षर बनाने की प्रवृति मात्र थी। साक्षर होना अलग बात है, सदाचारी होना अलग। सदाचारी राक्षसी प्रवृत्तियों की तरफ प्रेरित नहीं हो सकता, जबकि साक्षर को राक्षसत्व अपनाते देर नहीं लगती। यही कारण है कि शिक्षा के प्रचार–प्रसार के बावजूद समाज में विसंगतियां और विडंबनाएं बढ़ी है।

आज की जो शिक्षा है, वह व्यापक नहीं हैं पर उसकी एक निश्चित सीमा है, जो तुरंत तो लाभप्रद दिखायी देती है, किंतु आगे जाकर उच्चस्तरीय प्रभाव नहीं दिख पाती। यही कारण है कि बहुतेरे उच्च शिक्षितों के जीवन में अक्सर ऐसा नैराश्य और हताश का भाव आता है कि वे उस आध्यात्म की तरफ उन्मुख हो जाते हैं, जिसे कभी हेय दृष्टि से देखा करते थें। आज की शिक्षा हमें शिक्षित तो करती है, पर चेतन और संवेदनशील नहीं बना पाती। आज शिक्षा हमें शिक्षित तो करती है, पर चेतन और संवेदनशील नहीं बना पाती। आज शिक्षा का भी व्यावसायीकरण हो चुका है। शिक्षा महगीं हुई है। शिक्षा में समर्पण का भाव नहीं रह गया है डालर कमाना विदेशों में स्थापित होना तथा धनवान बनना शिक्षितों की प्राथमिकताओं में सम्मिलित हो गया है। आज कोई व्यक्ति आचरण के स्तर पर कितना ही गिरा हुआ या अनैतिक क्यों न हो, वह शिक्षा का हकदार होता है। स्पष्ट है कि ऐसा व्यक्ति जब आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर आगे का जीवन

प्रारंभ करेगा, तो वह समाज या देश को कुछ नहीं दे सकेगा। वह जीवनभर आत्मकेन्द्रित रहकर सिर्फ अपना भला ही कर सकेगा। पहले ऐसा नहीं था। गुरूकुलों की व्यवस्था थी और इन गुरूकुलों में भौतिकतावाद नहीं था। गुरूकुलों में प्रवेश से पूर्व छात्रके आचरण–व्यवहार आदि की कड़ी परख की जाती थी, और जब गुरूजन इस बात से आश्वस्त हो जाते थें कि प्रवेशार्थी विद्या का अधिकारी है तभी उसे गुरूकुल में प्रवेश दिया जाता था। ये विद्यार्थी जब पढ़कर बाहर निकलते थे, तो समाज और राष्ट्रहित के लिए सोचते थे, और करते थे। विद्या के प्रकाश को और फैलाते थे। आत्मकेन्द्रित होना इनका स्वभाव नहीं होता था। यही कारण था कि तब आज की तरह सामाजिक विसंगतियां नहीं थी।

मूल्य निर्धारित शिक्षा की आवश्यकता :–

वर्तमान समाज में मूल्यों के मूल्य में बहुत कमी आ गई है। इसके अनेकों कारण है:'

1. आधुनिक जीवन की जटिलताओं के कारण हमारा जीवन सरल नहीं रह गया है। इसके उपर अनेकों दबाव है जो हमारे अन्दर तनाव की स्थिति उत्पन्न कर देते है। हमारे लिए मुख्य कार्य यह रह जाता है कि हम तनाव को कम करें, चाहे इसके लिए हमें ऐसे कार्य भी करने पड़े जो कि अन्य व्यक्तियों के लिए या समाज के लिए अनुचित हों। मूल्य शिक्षा की आवश्यकता इस कारण है कि हम उस मूल्य को प्राथमिकता देना सीख लें जो मानव कल्याण के दृष्टिकोण से सबसे अधिक मूल्यावांन है।
2. वर्तमान समय में धर्म के सम्बन्ध में भी दूषित धारणाये हो गई हैं या तो धर्म की मान्यता लगभग समाप्त हो गई है या यह केवल औपचारिकता की भॉति रह गयी है। अतएवं धर्म से प्राप्त मूल्यों की मान्यता में भी कमी आ गई है। मूल्य निर्धारित शिक्षा विभिन्न धर्मों से अच्छे मूल्यों को प्राप्त करके विद्यार्थियों द्वारा ग्रहण करने को प्रोत्साहित करती है।

सूचना और संचार की क्रान्ति ने हमें 'वैचारिक प्रदूषण' की सौगात भी दी है। मीडिया ने दुनिया को मुट्ठी में जरूर कर लिया है, मगर बहुत कुछ ऐसा उजागर कर के हमारी किशोर और युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित भी किया है, जिसका डंका– छिपा रहना ही ठिक था। कामासक्ति और अश्लीलता के ज्वार–भाटे ने नैतिक मूल्यों को कहीं दूर उछाल फेंका है। भोगवादी मानसिकता ने हमें पैसे कमाने की उस तेज रफ्तार दौड़ में गले तक उतार दिया है, जहां नीति का कोई अर्थ ही नहीं है। यह 'ट्रैक' ही अनीति का है, जिस पर हम हांफते– ढांपते भाग रहे है। सब कुछ इस गति से भाग रहा है और उसी के साथ –साथ भागना विवशता है। समय कहां है इस भागमभाग में, कि मूल्यों की परवाह की जाए। यदि समय मिल भी जाए तो परिवेश नहीं है। परिवेश तो अनैतिकता का ऐसा बनता जा रहा है कि पूछिए ही मत।

निष्कर्ष एवं सारांश :–

यकीनन सूचना एवं संचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई है। यही कारण है कि अब विश्व का विस्तार सिमट गया है। इसे यूं भी कह सकते है कि विश्व आपकी मुट्ठी में सिमट गया है। कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाइल आदि ने दूरियां एकदम घटा दी है। नतीजतन बाजार तंत्र खूब परवान चढ़ा है। बाजारू मानसिकता बढ़ी है और उपभोक्ता संस्कृति में वृद्धि आश्चर्यजनक ढंग से हुई है। दूरियां मिटाने वाली सूचना और संचार की इस क्रांति ने कुछ ऐसी दूरिया बढ़ायी भी है, जो हमें भटकाव की तरफ ले जा रही है। हम, खासकर हमारा युवा वर्ग इस भटकाव का सबसे ज्यादा शिकार हुआ है । हमारा युवा वर्ग शिक्षा के उन मूल्यो से बहुत दूर चला गया है, जो हमारी धरोहर जैसे थे और जिन्हे हम मूल्य शिक्षा या नैतिक शिक्षा कहा करते थे। ये नैतिक मूल्य दम तोड़ चुके है। वर्जनाएं टूट चुकी हैं, फलतः अमर्यादित आचरण बढ़ा है।

एषां न विद्या न तपो न दानम् , ज्ञानम् न शीतलम् न गुणो न धर्मः

ते मृत्यु लोके भुवि भार भूता , मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति ।

उक्त श्लोक से ध्वनित होता है कि मनुष्य को मनुष्य बनाने वाले प्रमुख तत्वों में से विद्या प्रथम तत्व है। **'विद्या ददाति विनयं'** अर्थात विद्या ज्ञान की वह धारा है, जो व्यक्ति को विनयशील मनुष्य बनाती है। विद्या व्रत धारी ही सही अर्थों में स्नातक कहलाने योग्य होती है। वैदिक काल से जिस विद्या की गहरी जड़ो को हमो मनस्वी, वेदांती, ऋषि–मुनिसींचते आये, आज विद्या की वह परंपरा विलुप्त हो रही है। यह खोखलापन हममें इसलिए आया क्योंकि हम अपने आधार, अपनी जड़ो व अपनी संस्कृति से दूर होते चले गये। अपनी प्रचीन व्यवस्थाओं को हमने भुला दिया। शिक्षा के मायावी आवरण में ढ़के हम विद्या और शास्त्रीय विधि–विधानों से इतना दूर होते गये कि 'विश्व गुरू' कहलाने वाला भारत भ्रष्टाचार में अग्रणी हो गया।

अब विश्वास या आत्मा की आवाज जैसी बातें किताबी कही जाने लगी हैं। समाज जिस दिशा मे बढ़ रहा है और इस बढ़ने पर आत्ममुग्ध है, वास्तव में वह दिशाहीनता का द्योतक है। दिशाहीनता ही भटकाव की जन्मदात्री है। मूल्य, सभ्यता, संस्कृति और विरासत से हटने पर ही यह दिशाहीनता पैदा होती है और बाहरी आंडबर में खोकर हम अपनी जड़ो से हटने की यह भूल कर चुके हैं। एक आत्मघाती और खोखला बना देने वाली भूल। कुल मिलाकर, हम जड़ से विहीन वृक्ष की दशा में पहुच रहे हैं। उपभोक्तावाद, वाजारवाद, पश्चिम की हवा के साथ–साथ सूचना एवं संचार के मायाजाल में इस तरह भटक जाना कि हम अपने मूल्यों, नैतिकता और आदर्शो को इस हद तक विस्मृत कर दें कि हमारी पहचान ही खतरे में पड़ जाए, उचित नहीं। वैचारिक प्रदूषण और पश्चिम के खुलेपन के अन्धे अनुसरण ने हमें पथभ्रष्ट करने में कोई कोर –कसर नहीं छोड़ी है। हमारा वह चश्मा इस अंधी–आधी में उड़ गया है, जो हमें भले–बुरे की पहचान कराने में मदद पहुचाता है। यह घटाटोप दूर करना ही होगा, वरना पछतावा ही साथ रह जाएगा। देश और समाज अच्छे नागरिकों के लिए तरस जाएगा। और ऐसा नहीं है कि विद्या से दूर होती शिक्षा के दुष्परिणाम सामने नहीं आ रहे हैं। विसंगतियां, विषमताएं, विद्रूपताएं व विडंबनाएं तो बढ़ी हैं, खुद नवशिक्षित भी भ्रमित हैं। आज की शिक्षा के विकारों को लेकर उसमें कुठाएं पनपी हैं। वह मानसिक स्तर पर स्वस्थ नहीं हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

चौबे, एस0 पी0 (2003). *शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार,* आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, पृ0 299–304

पाठक पी0डी0 (1974).*भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें.* आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर पृ0 571–583

पाण्डेय डा0 रामेश्वर. (2006). *राष्ट्र गौरव–एक विशिष्ट अध्ययन.* गोरखपुर : द्विवेदी प्रकाशन मन्दिर

माथुर डा0 एस0एस0. (1997). *शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजिक आधार.* आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, पृ0 207– 217

Gandhi K.L. (1993). *Value Education - A Study of Poblic Opinion*, New Delhi : Gyan Publishing House.

****